



हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)



हडको को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार -

दिनांक 14 सितम्बर, 2026 हिंदी दिवस के अवसर पर, मुंबई के सिडको (CIDCO) एजीबिशन सेंटर, वाशी में आयोजित राजभाषा हीरक जयंती समारोह में, हडको को राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह प्रतिष्ठित पुरस्कार माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के कर-कमलों द्वारा हडको के माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय को प्रदान किया गया।

यह उपलब्धि हडको के लिए राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी।

संपादक

डॉ. तृप्ति मिश्रा दीक्षित

क्षेत्रीय प्रमुख, भोपाल

सह- संपादक

अभिषेक शर्मा

हिंदी नोडल अधिकारी एवं प्रशिक्षु अधिकारी (परि.)

डिस्कलेमर:-

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, लेख आलेख जो कि कार्मिकों के निजी विचार हैं

या किसी भी माध्यम से जुटाये गए हैं, उनके लिये हडको प्रबंधन संपादन पण्डल उत्तरदायी नहीं है।

डिजाइन एवं प्रिंट : Dazzle Ad, Bhopal

संदेश



प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल अपनी गृह पत्रिका "मध्य संदेश" के 12 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका हडको की गतिविधियों, उपलब्धियों तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। इस गृह पत्रिका के प्रकाशन से समस्त कार्मिकों के मौलिक लेखन प्रतिभा में वृद्धि के साथ ही राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की पृष्ठभूमि को भी महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के साथ ही भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय मध्य प्रदेश राज्य के सर्वांगीण विकास में सहयोग देते हुए हडको आवास, शहरी अवसंरचना, जलापूर्ति, सड़क विकास तथा विद्युत परियोजनाओं जैसी अनेक महत्वपूर्ण योजनाओं में वित्तपोषण के माध्यम से अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। मैं "मध्य संदेश" पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और समस्त कार्मिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।
शुभकामनाओं सहित।

संजय कुलश्रेष्ठ

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक





संपादक की कलम से



शब्द जब भाव बनकर कागज पर उतरते हैं, तो वे केवल लेख नहीं रह जाते, वे संस्थान की आत्मा बन जाते हैं। "मध्य संदेश" भी पिछले कई वर्षों से हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की इसी आत्मा को संजोता आ रहा है। यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि हम वर्ष 2026 का अंक लेकर उपस्थित हैं। इस अंक में हमारे साथियों की रचनात्मकता, समर्पण और राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा स्पष्ट रूप से झलकती है। यहाँ प्रकाशित लेख, कविताएँ और अनुभव न केवल कार्यालय की प्रगति को दर्शाते हैं, बल्कि हमें आपस में जोड़ने का कार्य भी करते हैं।

मैं हृदय से आभारी हूँ उन सभी रचनाकारों और सहयोगियों की जिन्होंने इस पत्रिका को अपने विचारों से समृद्ध किया। आपका सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है। आशा है "मध्य संदेश" का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा और राजभाषा के प्रति आपके लगाव को और प्रगाढ़ करेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

तृप्ति

डॉ. तृप्ति मिश्रा दीक्षित
क्षेत्रीय प्रमुख एवं संपादक



विषय-सूची

क्र.	विवरण	लेखक का नाम	पेज न.
1.	संदेश		3
2.	संपादक की कलम से		4
3.	आत्मविश्वास	डॉ. तृप्ति मिश्रा दीक्षित	6
4.	हडको क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल सम्मानित		7
5.	समय	आनंद सोनी	8
6.	हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को नराकास.....		9
7.	ई-ऑफिस: डिजिटल भारत की ओर एक सशक्त कदम	निमित्त जैन	10
8.	जब जलवायु जोखिम, ऋण जोखिम बन जाता है...	एल वी चेंथिल शिव गुरु	11
9.	रिटायरमेंट एक नई शुरुआत	विनय वर्मा	14
10.	मध्य प्रदेश के विकास में हडको प्रगति का सशक्त साथी	अंकित आगवेकर	16
11.	त्रिनेत्रा दो अध्याय, एक अटूट रिश्ता	आशा वासवानी	18
12.	माँ के बिना ओणम.....	सुनील कुमार	19
13.	ध्यान से सृजन तक	प्रीति बाला त्रिपाठी	20
14.	हार	धर्म प्रकाश खुशलानी	21
15.	कार्यालयी हिंदी को सशक्त बनाते	हुकुमचंद चौकसे	22
16.	ध्यान योग के लाभ	विनोद शर्मा	24
17.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) वर्तमान की शक्ति.....	अभिषेक शर्मा	26
18.	मेहनत की राह	तुलसी राम मांडगे	27
19.	एक कच्चा घड़ा हूँ मैं	शिवम शर्मा	28
20.	एक उम्मीद है	मानव वासवानी	29
21.	स्वाभिमानि बेटियाँ	महक नन्दवानी	30
22.	संघर्ष	अंजली खुशलानी	31
23.	डिजिटलीकरण और डिजिटल इंडिया	देवाशीष दीक्षित	32
24.	हकीकत	आदित्य सोनी	33
25.	मानव उपलब्धि की नई अंतरिक्ष उड़ान	कार्तिकेय दीक्षित	34
26.	छोटी चीजे बड़ी खुशियाँ	कु. सौम्या वर्मा	35
27.	उड़ान	रिद्धि मांडगे	36
28.	स्वच्छता गीत	सिद्धि मांडगे	36
29.	कार्यक्रम की झलकियाँ		
	• CSR के अंतर्गत हडको क्षेत्रीय कार्यालय....		37
	• टी.बी. उन्मूलन जागरूकता एवं निःशुल्क नेत्र ..		39
	• CSR पहल के तहत वाटर कूलर फर्नीचर....		40
	• एक पेड़ मां के नाम		41
	• योग दिवस		42
	• स्थापना दिवस		43
	• खेल दिवस		44
	• विविध		45





मध्य संदेश



आत्मविश्वास



डॉ. तृप्ति मिश्रा दीक्षित
क्षेत्रीय प्रमुख

कभी मौसम बदल जाते हैं
कभी अवसर बदल जाते हैं,
परिस्थितियाँ बदल जाती है,
लेकिन एक अच्छा खिलाड़ी हर मौसम में,
हर मैदान में खेलने का हौसला रखता है।
ये आसमाँ छीन गया तो क्या ?
नया ढूँढ लेंगे,
हम वो परिदे नहीं
जो उड़ना छोड़ देंगे ॥
मत पूछे हौसले हमारे आज कितने,
आज कितने विश्रब्ध है,
एक नई शुरुआत,
नया आरंभ तय है...
माना अभी हम निःशब्द है।
थे पारावर छूट गया तो क्या ?
नया सागर ढूँढ लेंगे।
हम वो कश्तियाँ नहीं जो
तैरना छोड़ देंगे ॥
कदम चलते रहेंगे...
जब तक श्वास है।

परिस्थिति से परे
स्वयं पर हमें विश्वास है,
एक रास्ता मिला नहीं तो क्या
नई राहे ढूँढ लेंगे।
हम वो मुसाफिर नहीं जो
चलना छोड़ देंगे ॥
ख्वाबों को महकता रखते हैं,
हम मंजिलों से रास्ता रखते हैं,
नशा हमें हमारी फितरत का,
घर धर करती है बुलंद...
इरादा जीत का।
ये मुकाम नहीं हासिल तो क्या ?
नये ठिकाने ढूँढ लेंगे,
हम वो राह नहीं जो
अपनी तलाश छोड़ देंगे ॥
हम वो परिद नहीं जो
उड़ना छोड़ देंगे।



हडको क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल सम्मानित

यह सम्मान हडको के 56वें स्थापना दिवस समारोह, 25 अप्रैल 2026 को वर्ष 2025-26 में उत्कृष्ट प्रदर्शन, आवास में सतत विकास एवं बुनियादी ढांचे में अभिनव वित्त पोषण में योगदान हेतु एक दशक के बाद हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कार प्रदान किया गया।





मध्य संदेश



समय



आनंद सोनी
संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त)

क्या समय धीरे बीतेगा?
अगर आप प्रतीक्षा करेंगे,
क्या समय तेज हो जाएगा?
अगर आप देरी कर रहे हैं,

अगर आप खुश हैं,
तो क्या यह समय जल्दी
बीत जाएगा?
और अगर आप दुखी हैं,
तो यह समय ही ना कट पाएगा,

अगर आप सोचेंगे,
इससे भी अच्छा समय आएगा,
तो यह समय भी कटना मुश्किल हो जाएगा।

यह आपका भ्रम है,
कि अच्छा समय आएगा,
असलियत तो यह है कि,
आप समय को जिस प्रकार देखेंगे,
वह समय वैसा ही बन जाएगा।



हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को नराकास (उपक्रम) भोपाल द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में उत्कृष्ट उपलब्धि पर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), भोपाल द्वारा राजभाषा हिन्दी की अर्द्ध वार्षिक प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा के आधार पर राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में किये गये उत्कृष्ट कार्यों के फलस्वरूप वर्ष 2025-2026 के लिए श्री मिथलेश कुमार, अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम) भोपाल द्वारा दिनांक 30 जुलाई, 2026 को आयोजित 54 वीं छः माही बैठक के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



डॉ. (श्रीमती) तृप्ति मिश्रा दीक्षित, क्षेत्रीय प्रमुख एवं श्रीमती आशा वासवानी, हिन्दी नोडल अधिकारी प्रथम पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करते हुए।





ई-ऑफिस: डिजिटल भारत की ओर एक सशक्त कदम



निमित जैन
संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त)



आज के डिजिटल युग में शासन और प्रशासन में पारदर्शिता, गति और दक्षता लाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को पूरा करने और कार्यालयीन कार्यप्रणाली को आधुनिक बनाने के लिए भारत सरकार के डिजिटल इंडिया मिशन के अंतर्गत ई-ऑफिस प्रणाली को लागू किया गया है। यह केवल एक सॉफ्टवेयर नहीं, बल्कि कार्य-संस्कृति में एक क्रांतिकारी बदलाव है। ई-ऑफिस क्या है? ई-ऑफिस एक संपूर्ण कागज-रहित (Paperless) कार्यालय प्रबंधन प्रणाली है। इस प्रणाली के माध्यम से फाइलों का निर्माण, आवाजाही, पत्राचार, नोटिंग, ड्राफ्टिंग और अभिलेखीकरण जैसे समस्त कार्य इलेक्ट्रॉनिक रूप से किए जाते हैं।

ई-ऑफिस के प्रमुख लाभ:

1. **कागज-रहित और पर्यावरण-** अनुकूल कार्यालय: फाइलों के डिजिटल होने से कागज की भारी बचत होती है, जो प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण में सहायक है।
2. **कार्य में अभूतपूर्व गति एवं पारदर्शिता:** अब फाइलों को एक टेबल से दूसरे टेबल तक पहुँचने में दिनों का इंतजार नहीं करना पड़ता। एक क्लिक पर फाइल संबंधित अधिकारी तक पहुँच जाती है और उसकी पूरी गतिविधि पर नजर रखी जा सकती है।
3. **त्वरित निर्णय एवं कहीं भी सुलभता:** अधिकारी कार्यालय से बाहर या दौरे पर रहते हुए भी वीपीएन के माध्यम से फाइलों का निपटारा कर सकते हैं, जिससे निर्णय प्रक्रिया तेज होती है।
4. **सुगम खोज, संरक्षण और जवाबदेही:** पुरानी फाइलों को ढूँढना अब सेकंडों का काम है। प्रत्येक गतिविधि का डिजिटल रिकॉर्ड रहने से जवाबदेही और सुरक्षा दोनों बढ़ी है।

निष्कर्ष: ई-ऑफिस "कम कागज, अधिक काम और तेज काम" के मंत्र को साकार करता है। यह सुशासन की दिशा में एक सशक्त कदम है।



जब जलवायु जोखिम, ऋण जोखिम बन जाता है...



एल वी चैथिल शिव गुरु
सहायक महाप्रबंधक (परियोजना)

जलवायु से जुड़ी चरम घटनाएँ अब अलग-थलग या दूर की बातें नहीं रह गई हैं। ये भारत समेत दुनिया भर में लोगों की जान, रोजी-रोटी और अहम बुनियादी ढाँचे के लिए बार-बार आने वाले खतरे के तौर पर तेज़ी से उभर रही हैं।

26 अगस्त 2026 को नेपाल में आई भयानक बाढ़ इस उभरते हुए जोखिम का एक बड़ा उदाहरण है। भोटेकोशी-त्रिशूली नदी प्रणाली में ग्लेशियर और पहाड़ के बड़े पैमाने पर ढहने से आई इस आपदा में बहुत से लोगों की जान गई और घर, सड़कें, पुल और अन्य जरूरी बुनियादी ढाँचे बड़े पैमाने पर नष्ट हो गए। नेपाल के पनबिजली (hydropower) सेक्टर पर इसका असर बहुत ज़्यादा पड़ा; शुरुआती अनुमानों के अनुसार, 12 पनबिजली प्रोजेक्ट, एक सोलर पावर प्लांट और ट्रांसमिशन इंफ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुँचा, जिससे लगभग 750 MW की पनबिजली क्षमता (नेपाल की कुल बिजली उत्पादन क्षमता का लगभग 10%) प्रभावित हुई।

तत्काल होने वाले मानवीय और भौतिक नुकसान के अलावा, ऐसी घटनाएँ HUDCO जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण संस्थानों (infrastructure financing institutions) के लिए एक अहम सवाल खड़ा करती हैं: जब कोई प्राकृतिक आपदा किसी मूल संपत्ति (underlying asset) को नुकसान पहुँचाती है, तो इससे परियोजना को वित्तपोषित करने वाली संस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है?

जलवायु जोखिम (Climate risk) से ऋण जोखिम (credit risk)

भयंकर बाढ़, चक्रवात, भूस्खलन, सूखा, भूकंप, सुनामी या ऐसी ही किसी घटना से भौतिक संपत्तियों को नुकसान पहुँच सकता है, कामकाज में रुकावट आ सकती है और किसी प्रोजेक्ट की कमाई करने की क्षमता कम हो सकती है। इससे उधार लेने वाले के कैश फ्लो पर बुरा असर पड़ सकता है और लोन न चुका पाने (डिफॉल्ट) की संभावना बढ़ सकती है। साथ ही, मुख्य संपत्ति को नुकसान पहुँचने से गिरवी रखी संपत्ति (कोलेटरल) की वैल्यू कम हो सकती है और उधार देने वाले को संभावित नुकसान बढ़ सकता है।

इस प्रकार, ट्रांसमिशन मैकेनिज़्म को इस तरह दिखाया जा सकता है:

जलवायु घटना - संपत्ति को नुकसान - कारोबार में रुकावट - कैश-फ्लो पर दबाव - डिफॉल्ट - क्रेडिट लॉस

Climate Event - Asset Damage - Business Disruption - Cash-flow Stress - Default - Credit Loss

HUDCO जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण संस्थानों के लिए यह जोखिम खास तौर पर अहम है, क्योंकि लोन अक्सर लंबे समय के लिए होते हैं, जबकि जिन एसेट के लिए फाइनेंस किया जाता है, उनकी आर्थिक उम्र कई दशकों तक हो सकती है। मंजूरी के समय जो प्रोजेक्ट आर्थिक रूप से सही लगता है, उसे 15-25 साल की लोन अवधि के दौरान जलवायु से जुड़े बिल्कुल अलग तरह के भौतिक जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है।

जलवायु जोखिम की विनियामक मान्यता

रेगुलेटर और मल्टीलेटरल संस्थाएं इस जुड़ाव के वित्तीय असर को तेज़ी से समझ रही हैं। रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया की 'क्लाइमेट वलनेरेबिलिटी असेसमेंट एंड स्ट्रेस टेस्टिंग' (climate Vulnerability Assessment and Stress Testing VAST)





क्रेडिट लॉस और कैपिटल के आकलन में छूटा हुआ पहलू

$$\text{ECL} = \text{PD} \times \text{LGD} \times \text{EAD}$$
$$\text{CRAR} = \frac{\text{Tier 1 Capital} + \text{Tier 2 Capital}}{\text{Credit RWA} + \text{Market RWA} + \text{Operational RWA}}$$

इसका ढांचा मोटे तौर पर इस प्रकार हो सकता है:



जलवायु संबंधी खतरों की मैपिंग - पोर्टफोलियो मैपिंग - जलवायु जोखिम स्कोरिंग - जलवायु-समायोजित प्रावधान और पूंजी
Climate Hazard Mapping - Portfolio Mapping - Climate Risk Scoring - Climate-Adjusted Provisioning & Capital
कम जोखिम वाले इलाकों में चल रहे प्रोजेक्ट्स सामान्य ECL फ्रेमवर्क के तहत जारी रह सकते हैं, जबकि मध्यम और उच्च जोखिम वाले एक्सपोजर के लिए अतिरिक्त जोखिम मूल्यांकन और प्रोविज़निंग की ज़रूरत पड़ सकती है।
सैद्धांतिक रूप से, ECL फ्रेमवर्क का विस्तार करके इसमें क्लाइमेट रिस्क फैक्टर (Climate Risk Factor CRF) को शामिल किया जा सकता है:

ECL PD x LGD x EAD x CRF

पूंजी रूपरेखा (capital framework) के तहत इसी तरह के तरीके पर विचार किया जा सकता है। जलवायु-संवेदनशील एक्सपोजर के लिए अतिरिक्त रिस्क वेट तय किया जा सकता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि संस्थान उन एक्सपोजर के मुकाबले अतिरिक्त नुकसान सहने की क्षमता बनाए रखें जो जलवायु की भौतिक घटनाओं के प्रति स्पष्ट रूप से अधिक संवेदनशील हैं।

$$CRAR = \frac{\text{Tier 1 Capital} + \text{Tier 2 Capital}}{\text{Credit RWA} + \text{Market RWA} + \text{Operational RWA} + \text{Climate RWA}}$$

Climate Risk जलवायु जोखिम	Credit & Capital Treatment ऋण और पूंजी का उपचार
Low कम	Normal ECL and Normal capital charge सामान्य ECL और सामान्य पूंजी का उपचार
Moderate & High मध्यम और उच्च	Climate-adjusted ECL & Enhanced capital charge जलवायु-समायोजित ECL और बढ़ा हुआ कैपिटल चार्ज

निष्कर्ष

इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए फाइनेंस करने वालों के लिए क्लाइमेट चेंज तेज़ी से क्रेडिट रिस्क का मुद्दा बनता जा रहा है। किसी बहुत ज्यादा खराब मौसम की घटना का आर्थिक असर सिर्फ फिजिकल नुकसान तक ही सीमित नहीं रहता: आखिर में यह लेंडर की बैलेंस शीट पर कम कैश फ्लो, ज्यादा डिफॉल्ट, गिरती हुई कोलैटरल वैल्यू और बढ़ते क्रेडिट नुकसान के रूप में दिख सकता है।
लंबे समय तक चलने वाले इंफ्रास्ट्रक्चर एसेट्स के लिए फाइनेंसिंग करने वाली संस्थाओं के लिए, किसी क्लाइमेट इवेंट के होने के बाद ही इस जोखिम को पहचानना बहुत देर हो सकती है। इसके बजाय, मकसद यह होना चाहिए कि क्लाइमेट सेंसिटिव एक्सपोजर की पहले ही पहचान कर ली जाए और उनसे निपटने के लिए ज़रूरी फाइनेंशियल बफ़र तैयार किए जाएं।
इसलिए, क्लाइमेट-एडजस्टेड ECL और कैपिटल फ्रेमवर्क, इंफ्रास्ट्रक्चर क्रेडिट रिस्क मैनेजमेंट के विकास में एक तार्किक अगला कदम हो सकता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस का अगला पड़ाव सिर्फ जलवायु-अनुकूल एसेट्स के लिए फाइनेंसिंग करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा फाइनेंशियल सिस्टम बनाना है जो उन एसेट्स से जुड़े जलवायु जोखिमों का सामना कर सके।





रिटायरमेंट

एक नई शुरुआत



विनय वर्मा
सहायक महाप्रबंधक (सचि.)

आजकल रिटायरमेंट का जैसे कि सीजन ही चल रहा हो। चारों तरफ ये ही सुनाई देता है कि आज इसका रिटायरमेंट है, कल उसका या इसके रिटायरमेंट को इतना समय बचा है, उसके रिटायरमेंट को उतना समय बचा है। कोई परिचित का रिटायरमेंट था, तो सोच रही थी कि उनको बधाई संदेश भेजूं। बधाई संदेश में कुछ मेसेज भी लिखना चाह रही थी, तो सोच रही थी कि क्या लिखू। खैर मन की आवाज सुनी और सोचा कि मैं क्या मेसेज देना चाहती हूं रिटायरमेंट पर। कलम उठाई और बस लिखना शुरू कर दिया, मेसेज कुछ इस प्रकार था -

""रिटायरमेंट अर्थात् सेवानिवृत्ति, इतनी शानदार उपलब्धि हासिल करने पर आपको बधाई। हमारा परिवार हमेशा से आपको सम्मान की नज़र से देखता आया है और आपके जीवन के इस नए और हकदार पड़ाव में कदम रखने पर हमें बहुत खुशी हो रही है। आपका रिटायरमेंट का समय अच्छी सेहत, आराम और उन चीज़ों के लिए भरपूर समय के साथ बीते जो आपको पसंद हैं।

रिटायरमेंट का दिन हमारी ज़िंदगी का एक बहुत खास दिन होता है। क्योंकि इसी दिन से ज़िंदगी की एक अलग नई पारी शुरू होती है। यह वह दिन है जो आपको अपने लिए जीना शुरू करने की याद दिलाता है। पूरी ज़िंदगी आप अपने करीबियों और अपनों के लिए जिए हैं, लेकिन अब अपने बारे में भी सोचें। अपनी सेहत को समय दें, वह भी आपसे बात करना चाहती है; अपने शरीर से प्यार करें, जो भगवान का दिया हुआ सबसे बड़ा तोहफा है, इसलिए अपने शरीर से भी बात करना शुरू करें। अब अपनी ज़िंदगी को अपनी मर्जी से नए सिरे से व्यवस्थित करने का समय है। और यह समय भगवान का शुक्रिया अदा करने का भी है कि उन्होंने इतनी शानदार ज़िंदगी दी और आपकी सभी इच्छाओं और सपनों को पूरा किया। इसलिए, बिना किसी जल्दबाज़ी के शांति से भगवान से बात करने के लिए भी समय निकालें। मज़ाकिया अंदाज़ में कहें तो, यह सही मायनों में थोड़ा 'मतलबी (Selfish)' बनने का समय है। क्योंकि खुद को समय देना और अपनी सेहत का ध्यान रखना, यह सबसे बेहतरीन तोहफ़ा है जो आप अपने बच्चों को दे सकते हैं- यह तोहफ़ा उस दौलत से कहीं बढ़कर है जो आपने उनके लिए जमा की है।



तो, मैं फिर से एक बार फिर से कहना चाहूंगी कि जिंदगी के इस शानदार पड़ाव पर पहुँचने के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। आपकी रिटायरमेंट अच्छी सेहत, सुकून और उन चीजों के लिए भरपूर समय के साथ बीते जिन्हें आप पसंद करते हैं।"

ये मेसेज तो जो विचार मेरे मन में आये, वैसा बनाया और अपने परिचित को भेज दिया। पर कुछ मन की बातें और हैं जो मेरे मन में सबके लिए आती हैं, मैं अपने इस लेख के माध्यम से सबको शेयर करना चाहती हूँ। मुझे लगता है जब 55 वर्ष की आयु के आसपास हो जाते हैं तो रिटायरमेंट के 5 साल पहले से थोड़ी प्लानिंग कर लेनी चाहिए, कि अब न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर, बस मैं और मेरी तन्हाई जिसमें मैं रोजाना अपने आप से थोड़ी थोड़ी बातें करूँ। न किसी की पॉलिटिक्स में, न किसी को सताना, न किसी को कोई कष्ट देना, न डराना धमकाना और न ही किसी से डरना बस बाहरी दुनिया से अंदरूनी दुनिया पर ध्यान देना, क्योंकि वो भी हमें बहुत सारे मेसेज देती रहती है, जैसे कि हमारी सेहत से संबंधित मेसेजेस, या फिर हम जब किसी के साथ कुछ गलत करते हैं तो वो हमें जागृत करती रहती है, हमारी स्वयं की गलतियों के लिए। ऐसा ख्याल इसलिए आया कि जब दिमागी शांति (Mental Peace) होगा तभी तो शरीर भी स्वस्थ रहेगा। थोड़ा थोड़ा अपनी सेहत की तरफ ध्यान देना शुरू कर देना चाहिए क्योंकि जिंदगी की भागदौड़ और जिम्मेवारियों में हम अपने आप की ही सबसे ज्यादा उपेक्षा करते हैं और सब जिम्मेवारियों में अपने आप को ही सबसे पीछे रखते हैं। ये पड़ाव थोड़ी-थोड़ी ब्रेन की वर्जिश भी मांगने लगता है। आपने गौर किया होगा कि इस उम्र तक आते आते हमारी Short Term Memory थोड़ी कम होने लगती है। अतः कोई मनोरंजक अपनी हॉबी से संबंधित क्रिया / क्लास ज्वाइन कर लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में कुछ अपनी पसंद की चीज सीखना शुरू कर देना चाहिए जैसे कि गाना गाना, डांस, पेंटिंग करना, बैडमिंटन या कोई और गेम खेलना, स्विमिंग, ऐसी और भी बहुत सारी चीजें हैं अपनी पसंद अनुसार। इससे ब्रेन एक्टिव बना रहता है।

खान-पान की बातें करें तो सोचना चाहिए की जिंदगी भर बहुत खाया अपनी पसंद का अब उसको बस टेस्ट करने लायक ही खाना है क्योंकि अब उसको जम कर खाने से अपने शरीर पर जुल्म करने जैसा होगा। किसी की बुराईयाँ करने के बजाए सबके अंदर की अच्छाईयों को ढूँढना शुरू कर देना चाहिए, बुराईयाँ उस व्यक्ति तक ही रहने दीजिए क्योंकि जग जाहिर है कि आप स्वयं को बदल सकते हो दुनिया को नहीं, और समुद्र मंथन के जैसे लोगों की अच्छाओं को अपने अंदर समाहित कर लो। क्योंकि दण्ड देने के लिए तो ईश्वर है न, कहते हैं न कि उपर वाले की लाठी में आवाज नहीं होती अतः किसी को ठीक करने के बजाए उससे वार्तालाप कर उसकी समस्या / मंशा को सुन लो, ईत्यादि।

हर रोज भगवान को धन्यवाद देना इस खूबसूरत जिंदगी और उसकी उपलब्धियों के लिए धीरे-धीरे 55 साल से ही ऐसा शुरू कर देने पर रिटायरमेंट के दिन से ही आपके अंदर ये सारे गुण समाहिता हो जाएंगे और जिंदगी का ये पड़ाव आपको एडजस्ट करने में समय नहीं लगेगा बल्कि आप एक रूटिन में शुरू से बंधे हुए होंगे।



मध्य प्रदेश के विकास में हडको
प्रगति का सशक्त साथी



अंकित आगवेकर
वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)

413 नगरीय निकायों में विकास की नई तस्वीर : हडको की वित्तीय भागीदारी से बेहतर होती शहरी जिंदगी मध्यप्रदेश में तेजी से बढ़ते शहरीकरण के बीच नागरिकों को बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण शहरी सुविधाएँ उपलब्ध कराना राज्य के विकास की महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। इसी उद्देश्य से मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना एवं विकास योजना – फेज-IV के अंतर्गत प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में नई अधोसंरचना के विकास तथा मौजूदा अधोसंरचना के उन्नयन का कार्य किया जा रहा है। योजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश के सभी 413 नगरीय स्थानीय निकायों (ULBs) को शामिल किया गया है, जिससे इसका लाभ प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर पहुँच रहा है।

इस महत्वाकांक्षी योजना की फाइनेंसिंग में हडको की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। योजना के अंतर्गत परियोजना लागत का 20 प्रतिशत मध्यप्रदेश शासन द्वारा सब्सिडी के रूप में उपलब्ध कराया जा रहा है, जबकि शेष 80 प्रतिशत राशि मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड (MPUDCL) द्वारा हडको से ऋण के रूप में प्राप्त की गई है। प्रत्येक ULB के लिए ऋण सहायता की राशि उसके जनसंख्या आकार के आधार पर निर्धारित की गई है। इस प्रकार, छोटे-बड़े सभी नगरीय निकायों की आवश्यकताओं के अनुरूप वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

वित्तीय सहायता से धरातल पर दिखा बदलाव

योजना के अंतर्गत ULBs द्वारा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न विकास कार्य किए गए हैं। इनमें मुख्य रूप से सड़कों का निर्माण एवं सुधार, शहरी यातायात में सुधार, सड़क डिवाइडर, ड्रेनेज एवं नालियों का विकास, स्ट्रीट लाइटिंग, सौंदर्यीकरण, उद्यान विकास, सामाजिक एवं खेल अधोसंरचना, ULB कार्यालय भवनों का निर्माण तथा अन्य विकास कार्य शामिल हैं।

इन कार्यों का प्रभाव केवल निर्मित परिसंपत्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध आम नागरिक के दैनिक जीवन की सुविधा, सुरक्षा एवं जीवन की गुणवत्ता से है। बेहतर सड़कें आवागमन को सुगम बनाती हैं, ड्रेनेज व्यवस्था जलभराव की समस्या को कम करने में सहायक होती है, स्ट्रीट लाइटिंग से रात्रिकालीन आवागमन अधिक सुरक्षित होता है, जबकि उद्यान एवं सामाजिक-खेल अधोसंरचना शहरों को अधिक सुविधाजनक और रहने योग्य बनाती है।



Road alongwith divider and streetlight Morena



Street Road in Gwalior



हडको की वित्तीय सहायता से व्यापक प्रभाव

हडको के भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा गत वित्तीय वर्ष में इस योजना के अंतर्गत ₹840 करोड़ का डिस्बर्समेंट किया गया। इतनी बड़ी राशि का वित्तीय सहयोग प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में विकास कार्यों को गति देने में महत्वपूर्ण रहा है।

योजना के अंतर्गत कार्यों के उचित क्रियान्वयन एवं हडको द्वारा उपलब्ध कराई गई राशि के प्रॉपर एंड-यूज को सुनिश्चित करने के लिए साइट इंस्पेक्शन भी एक महत्वपूर्ण कार्य रहा। इस दौरान लगभग 40 ULBs का साइट इंस्पेक्शन किया गया। निरीक्षण के दौरान विभिन्न नगरीय निकायों में सड़कों, ड्रेन्स, स्ट्रीट लाइटिंग, सड़क डिवाइडर, उद्यान, सामाजिक एवं खेल अधोसंरचना तथा ULB कार्यालय भवन आदि से संबंधित विकास कार्य धरातल पर क्रियान्वित पाए गए।

इन विकास कार्यों को देखकर यह स्पष्ट होता है कि हडको की फाइनेंसिंग केवल एक वित्तीय लेन-देन नहीं है, बल्कि यह नागरिकों के दैनिक जीवन में वास्तविक और सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम बनी है।

वित्तीय सहयोग से जन-जीवन में सकारात्मक परिवर्तन

मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना एवं विकास योजना – फेज-IV के माध्यम से प्रदेश के 413 नगरीय निकायों में किए जा रहे विकास कार्य शहरी अधोसंरचना को मजबूत करने के साथ-साथ नागरिकों के लिए अधिक सुगम, सुरक्षित, स्वच्छ एवं सुविधाजनक शहरी वातावरण तैयार करने में योगदान दे रहे हैं।

हडको की फाइनेंसिंग ने इस विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य किया है। प्रदेश के विभिन्न शहरों और नगरीय क्षेत्रों में दिखाई देने वाले ये विकास कार्य इस बात का प्रमाण हैं कि सही दिशा में किया गया वित्तीय सहयोग किस प्रकार धरातल पर ठोस परिसंपत्तियों में बदलकर लाखों नागरिकों के जीवन को प्रभावित कर सकता है।

मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना एवं विकास योजना – फेज-IV के माध्यम से हडको ने अपनी वित्तीय भूमिका से आगे बढ़कर “Promoting Sustainable Habitat Development for Transforming the Lives of People” तथा “Enhance the Quality of Life” के अपने व्यापक उद्देश्य को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।



CC Road at Jabalpur



CC Road in Ganjbasoda





त्रिनेत्रा दो अध्याय, एक अटूट रिश्ता



आशा वासवानी
वरिष्ठ प्रबंधक (सचि.)

मैं हमेशा सोचती थी कि नानियों को अपने नाती-नातिन अपने बच्चों से भी ज्यादा प्यारे क्यों लगते हैं? अपने बच्चों से भी ज्यादा दिल क्यों आता है उन पर?

लेकिन जब मैंने अपनी नातिन को पहली बार अपनी गोद में लिया, तब मुझे इस सवाल का जवाब मिल गया। ये एहसास शब्दों से परे है। क्या सुखद एहसास है! उसके लिए पूरी-पूरी रात जागना भी एक धन्य एहसास लगता है, बिल्कुल भी थकान नहीं होती। कहते हैं न, अपने बच्चों को बड़ा होते देखना सुख है, पर अपने बच्चों के बच्चों को देखना परमानंद और अनंत खुशी का एहसास होता है।

ईश्वर ने मुझे बेटी के रूप में लक्ष्मी दी थी और मेरी बेटी ने मुझे हर कदम पर गर्व महसूस

कराया है। उसने साबित किया कि बेटियाँ सच में घर का चिराग होती हैं, जो दो परिवारों को रोशन करती हैं। और आज उसी प्यारी बेटी ने मुझे नानी बनाकर मेरे जीवन को पूरा कर दिया है। मेरी बेटी मेरी पूँजी है और मेरी नातिन मेरे जीवन का सबसे सुंदर उपहार है। इस खुशी के साथ ईश्वर ने मेरे जीवन में एक अद्भुत संयोग भी जोड़ा है। मेरी पूज्य माँ का स्वर्गवास *14 अगस्त 2025* को हुआ था और ठीक एक साल बाद, पवित्र *सावन के महीने में 14 अगस्त 2026* को मेरी नातिन का जन्म हुआ। यह मेरे लिए किसी उत्सव से कम नहीं है। ऐसा लगा जैसे मेरी माँ ही लौटकर मेरी गोद में आ गई हो।

सावन में जन्म होने से बिटिया पर शिवजी की विशेष कृपा है, इसलिए हमने बड़े प्यार के साथ *इनका नाम त्रिनेत्रा* रखा है।

माँ की ममता की एक नई झलक

तेरी आँखों में मेरी माँ की ममता झलकती है,
तेरी मुस्कान में उनकी छवि चमकती है।

तू सिर्फ मेरी नातिन नहीं, मेरी माँ की परछाई है,
तेरे आने से जैसे मेरी दुनिया फिर मुस्कुराई है।



माँ के बिना ओणम...



सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)



माँ के बिना ओणम...ओणम आ रहा है। बाजार सज गए हैं, फूलों की खुशबू आने लगी है, पर मन है कि कुछ मनाने को तैयार ही नहीं है। पहले ऐसा नहीं था। माँ थीं तो ओणम सच में त्यौहार लगता था। मेरी माँ BHEL में नौकरी करती थीं। रोज़ उनका ऑफिस टाइम सुबह 7 बजे का था, घर से 6:45 पर निकल जाती थीं। फिर भी हमारे उठने से पहले ही सब कुछ कर जाती थीं - मानो कोई जादू हो। सुबह 4 बजे उठकर, घर की साफ-सफाई, नाश्ता, टिफिन, हमारे स्कूल के कपड़े - सब व्यवस्थित करके चली जाती थीं। हम उठते थे तो घर एकदम सजा हुआ मिलता था। हाँ, ओणम के दिन उनकी छुट्टी होती थी, इसलिए उस दिन वो पूरा दिन हमारे साथ होती थीं, पूरे घर में त्यौहार बनकर। ओणम की सुबह तो जैसे जादू होती थी। उनका आँगन में फूलों से बनी बड़ी सी पूकलम बनाना, नए कपड़ों के लिए प्यार से डांटना और रसोई में तरह-तरह के पकवान बनाना। उनकी मुस्कान में ही ओणम बसता था। पर अब... माँ के जाने के बाद, सब कुछ सूना लगता है। पूकलम तो बन जाती है, पर उसमें वो रंग नहीं रहे। पकवान तो बनते हैं, पर वो स्वाद नहीं रहा। त्यौहार तो कैलेंडर में आ रहा है, पर मन के भीतर नहीं आ रहा। शायद यही जीवन है। कुछ त्यौहार हम मनाते नहीं, बस उनकी यादों के साथ जी लेते हैं। माँ, आप जहाँ भी हैं, आपका ओणम खुशियों भरा हो।





मध्य संदेश

ध्यान

से

सृजन तक



प्रीतीबाला त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)

ध्यान से सृजन तक रचनात्मकता कोई बाहरी गुण नहीं, बल्कि हमारे भीतर की एकाग्रता और शांति का परिणाम है। जब मन शांत होता है, तभी नए, सुंदर और मौलिक विचार जन्म लेते हैं। अशांत मन में रचना नहीं, केवल उलझन होती है। कार्यालय में रचनात्मकता का अर्थ केवल नया आविष्कार करना नहीं है, बल्कि हर कार्य को पूरी शिद्दत, सुंदरता और अपनेपन के साथ करना है। चाहे वह एक साधारण फाइल को व्यवस्थित करना हो या किसी बड़े आयोजन की तैयारी - हर कार्य में जब हम अपना दिल लगाते हैं, तो वही रचनात्मकता बन जाती है। जैसा कि आप सभी जानते हैं, कार्यालय के हर छोटे-बड़े आयोजन में, चाहे वह दीप प्रज्वलन समारोह हो, स्वतंत्रता दिवस हो या ओणम जैसा कोई भी उत्सव हो, मेरी ओर से सजावट और व्यवस्था में एक छोटा सा योगदान देने का प्रयास रहता है। एक छोटी सी रंगोली बनाना, दीयों को सलीके से सजाना या मंच को सुंदर बनाना - इन छोटे-छोटे कार्यों में मुझे असीम आनंद और संतोष मिलता है। मैं यह सब इतनी शिद्दत और एकाग्रता के साथ कर पाती हूँ, इसका पूरा श्रेय मेरी ध्यान की साधना को जाता है। प्रतिदिन किया गया ध्यान मन को स्थिर करता है, विचारों के शोर को शांत करता है और किसी भी कार्य को पूरे मन और पूरी ऊर्जा से करने की शक्ति देता है। ध्यान ही वह सेतु है जो हमें हमारे भीतर की रचनात्मकता से जोड़ता है। मेरा मानना है कि जब हम ध्यान के माध्यम से भीतर से जुड़ते हैं, तो हमारी रचनात्मकता स्वतः ही निखर कर बाहर आती है। तब कार्य केवल कार्य नहीं रह जाता, वह एक उत्सव, एक साधना बन जाता है।



हार



धर्म प्रकाश खुशलानी
प्रबंधक (वित्त)

सपने देखने कुछ लोगों ने,
कितनों से वो भी हो न पाया!
हिम्मत रखें कि कम सोच रखें,
डरते नहीं कहें वास्तविकता से।
कुछ डर के मारे हार गए,
अपने सपनों को टाल गए।

सपनों के सच करने की मेहनत,
कितनों से वो भी हो न पाया!
तुम जान लगाकर डटे रहो,
बाधाओं से डरकर डरे नहीं।
कुछ डर के मारे हार गए,
अपने सपनों को टाल गए।

अंतिम क्षण में न घबराना,
कितनों से वो भी हो न पाया!
पर तुम्हारा विश्वास अब भी कायम,
तुम डरो नहीं परिणामों से।
कुछ डर के मारे हार गए,
अपने सपनों को टाल गए।

परिणाम आए वो हार स्वीकारना,
कितनों से वो भी हो न पाया !
तुम भी अगर हारे तो चिंतित न होना,
दुबारा प्रयास करने से डरना नहीं,
क्योंकि कुछ डर के मारे हार गए,
अपने सपनों को टाल गए।





कार्यालयी हिंदी को सशक्त बनाते आधुनिक राजभाषा उपकरण



हुकुमचंद चौकसे
उप प्रबंधक (प्रशासन)

भारत सरकार की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है। पहले यह माना जाता था कि हिंदी में टाइपिंग और अनुवाद कठिन है, परन्तु आज प्रौद्योगिकी ने इस धारणा को पूरी तरह बदल दिया है। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने कई ऐसे आधुनिक और निःशुल्क टूल्स विकसित किए हैं, जिनकी सहायता से कार्यालयीन हिंदी में कार्य करना अत्यंत सरल, तेज और प्रभावी हो गया है।

कार्यालयीन हिंदी के लिए 7 अत्यंत उपयोगी उपकरण:

1. कंठस्थ 2.0 - अनुवाद का महासाधन:

यह राजभाषा का सबसे लोकप्रिय उपकरण है। यह केवल शब्दों का नहीं, बल्कि पूरे वाक्य और संदर्भ का अनुवाद करता है। इसमें प्रशासन, बैंकिंग, रेलवे जैसे विभिन्न क्षेत्रों के शब्द-संग्रह पहले से मौजूद हैं। अब लंबी अंग्रेजी फाइलों का हिंदी अनुवाद कुछ ही मिनटों में हो जाता है।

2. ई-महाशब्दकोश:

यह एक विशाल डिजिटल शब्द-संग्रह है। जब हम ई-ऑफिस या किसी भी जगह हिंदी में टाइप करते हैं, तो यह सही शब्द सुझाता है। अंग्रेजी के कठिन और तकनीकी शब्दों का सटीक हिंदी पर्याय खोजने के लिए यह सबसे उत्तम साधन है।

3. ई-ऑफिस और हिंदी:

ई-ऑफिस प्रणाली ने हिंदी के प्रयोग को नई गति दी है। ई-ऑफिस में ही ट्रांसलिटरेशन, फॉनेटिक टाइपिंग और शब्दकोश की सुविधा उपलब्ध है। अब हिंदी में नोटिंग और ड्राफ्टिंग करना उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी में।

4. लीला (LILA) ऐप - हिंदी सीखें अपनी भाषा में:

लीला ऐप उन साथियों के लिए वरदान है जो हिंदी सीखना चाहते हैं। इस ऐप के माध्यम से आप अपनी मातृभाषा, जैसे - तमिल, तेलुगु, मलयालम, बंगाली आदि से 14 भाषाओं के माध्यम से हिंदी सीख सकते हैं।

5. सारथी और वॉइस टाइपिंग:

अब टाइप करने की झंझट भी समाप्त हो गई है। वॉइस टाइपिंग टूल से आप केवल बोलकर हिंदी में टाइप कर सकते हैं। यह टूल आपकी आवाज को पहचान कर तुरंत हिंदी में लिख देता है, जिससे समय की बहुत बचत होती है।



6. राजभाषा ई-लर्निंग पोर्टल:

यह पोर्टल हिंदी कार्यशालाओं का डिजिटल रूप है। इसमें कार्यालयीन हिंदी, अनुवाद, टिप्पण लेखन से संबंधित सभी पाठ्यक्रम ऑनलाइन उपलब्ध हैं।

7. हिंदी ई-टूलकिट:

यह सभी टूल्स का एक समग्र पैकेज है। इसे एक बार कंप्यूटर पर इंस्टॉल करने से शब्दकोश, वर्तनी जाँच, टाइपिंग टूल सभी एक साथ उपलब्ध हो जाते हैं।

निष्कर्ष:

निःसंदेह, इन उपकरणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि तकनीक राजभाषा की सबसे बड़ी मित्र है। इनका अधिक से अधिक प्रयोग करके हम न केवल राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि "हिंदी है हम" के भाव को भी सार्थक कर सकते हैं।



संगति का प्रभाव

एक सेब की कहानी से, कहते हैं एक सड़ा सेब पूरी टोकरी को सड़ा देता है। यही संगति का प्रभाव है। बहुत पहले की बात है, हरी नाम का एक होनहार लड़का था। पढ़ने में अच्छा था। पर बुरी संगति में आकर वह बिगड़ गया।

उसके पिता ने उसे समझाने के लिए एक टोकरी में अच्छे सेबों के साथ एक सड़ा सेब रख दिया। तीन दिन में एक सड़े सेब की संगत से सारे सेब सड़ गए। हरी समझ गया कि बुरी संगति का असर कितना बुरा होता है।

यही बात हमारे कार्यालयीन जीवन पर भी लागू होती है। कार्यालय में

भी यदि हम नकारात्मक सोच वाले, हमेशा शिकायत करने वाले और काम टालने वाले लोगों की संगति में रहेंगे, तो धीरे-धीरे हमारी कार्यक्षमता भी वैसी ही हो जाएगी। वहीं अगर हम सकारात्मक, मेहनती और सहयोगी साथियों के साथ रहेंगे, तो हमारा मन भी प्रसन्न रहेगा और कार्य में गुणवत्ता आएगी।

इसलिए आवश्यक है कि हम अच्छी संगति का चुनाव करें, क्योंकि संगति ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करती है।





ध्यान योग के लाभ



विनोद शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (आई.टी.)

ध्यान मन को अराजकता की स्थिति से आनंद की स्थिति में ले जाने का कौशल है – बेचैनी से गहन शांति तक। दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में मन बहुत सारे प्रभाव, चिंताएं और तनाव एकत्रित करता है। यह हमें खुश नहीं रहने देता। वे हमारे अंतर्ज्ञान को अवरुद्ध करते हैं। वे हमारी खुशी को रोकते हैं। यह प्रभाव मन पर दाग छोड़ जाते हैं और अनेक मानसिक और शारीरिक समस्याएँ पैदा करते हैं।

अतः ध्यान एक ऐसा कौशल है जिससे मन को कम समय में शांत किया जा सकता है। 15-20 मिनट में गहन विश्राम का अनुभव कर सकते हैं, जो सबसे गहरे विश्राम से भी अधिक गहरा होता है। ध्यान की कला हमारी मानसिक सतर्कता, शारीरिक तंदुरुस्ती को बढ़ाती है तथा भावनात्मक सामंजस्य को बढ़ाती है। ध्यान वह अवस्था है जहाँ से सब कुछ आया है और जहाँ सब कुछ जाता है। यह आंतरिक शांति है जहाँ हम आनंद, खुशी और शांति महसूस करते हैं।

ध्यान के व्यावहारिक लाभ :

ध्यान का अभ्यास जब लगन से किया जाता है तो निम्नलिखित लाभ मिलते हैं:

1. **मानसिक स्पष्टता :** ध्यान एक शांत मन बनाने का समाधान है जो लालसा और घृणा से ऊपर है। जब तक मन शांत नहीं होगा, हम अपने भीतर सामंजस्य और एकता का अनुभव नहीं कर सकते। ध्यान इस पल को स्वीकार करना है और हर पल को पूरी गहराई के साथ जीना है। ध्यान हमें अधिक तेज, खुशहाल और अंतर्ज्ञानी बनाता है।



2. **अच्छा स्वास्थ्य :** स्वास्थ्य क्या है? स्वस्थ रहना क्या है? जब व्यक्ति शारीरिक रूप से मजबूत, मानसिक रूप से शांत, स्थिर और अंदर से भावनात्मक रूप से कोमल होता है, तो वह स्वस्थ होता है। यदि मन कठोर है, मन आलोचनात्मक है, तो यह मानसिक स्वास्थ्य नहीं है। स्वस्थ होना आंतरिक से बाहरी और बाहरी से आंतरिक की ओर एक सहज प्रवाह है। संस्कृत में एक शब्द है 'स्वास्थ्य', जिसका अर्थ है अच्छी सेहत होना। इसका अर्थ स्वयं में रहना भी है। स्वयं में स्थित होना ही स्वास्थ्य शब्द है। ऐसा कैसे करें? इसका उत्तर है प्राणायाम और ध्यान।
 3. **प्रसन्नता :** प्रसन्नता यहीं और अभी है। और इसे पाने का सबसे अच्छा तरीका ध्यान है। इससे हमारा मन और स्वास्थ्य बेहतर होता है तथा अधिक खुशी मिलती है। पूजा का सर्वोत्तम स्वरूप प्रसन्न रहना है। जब हम शांत और एकाग्र होते हैं, तो अंदर का शोर संगीतमय होता है, बादल जादुई होते हैं और बारिश तरल प्रेम होती है। इसलिए खुश रहें!
 4. **तीक्ष्ण फोकस :** मुस्कान, हंसी और ध्यान मानव जीवन के विशेषाधिकार हैं। ध्यान एकाग्रता के माध्यम से मन को तेज करता है और विश्राम के माध्यम से मन का विस्तार करता है। ध्यान गति से स्थिरता की ओर, ध्वनि से मौन की ओर की यात्रा है।
 5. **बढ़ी हुई ऊर्जा :** गहन विश्राम और गतिशील क्रियाकलाप एक दूसरे के पूरक हैं। यदि हमने अपने मन और शरीर को गहन विश्राम नहीं दिया है तो हम गतिशील रूप से सक्रिय कैसे हो सकते हैं? जो व्यक्ति कभी नहीं सोया, वह कभी भी ऊर्जावान महसूस नहीं कर सकता। जब हम बहुत सारी गतिविधियों में व्यस्त होते हैं, उस समय ऊर्जा कम हो जाती है। ऐसे समय पुनः ऊर्जा प्राप्त करने के लिए ध्यान करना चाहिये का।
 6. **तनाव मुक्त :** जब हमारे पास करने के लिए बहुत अधिक काम होता है और हमारे पास पर्याप्त समय और ऊर्जा नहीं होती, तो हम तनावग्रस्त हो जाते हैं। ऐसे समय या तो हम अपना कार्यभार कम कर दें, जो कि आजकल संभव नहीं लगता, या अपना समय बढ़ा दें – यह भी संभव नहीं है। इस स्थिति में अपनी ऊर्जा का स्तर बढ़ाना ही एकमात्र उपाय है।
 7. **रचनात्मकता का रहस्य :** जब हम भीड़ में होते हैं, उत्तेजित होते हैं, या हर समय बात करते रहते हैं, तो हमारे अंदर से कोई रचनात्मक बात नहीं निकलती। कुछ रचनात्मक विषय-वस्तु बनाने के लिए हमें एक कोने में जाना पड़ता है जहाँ कोई नहीं हो, कोई हमें परेशान न करे, फिर हम बैठते हैं फिर उसमें से कुछ निकल आता है। प्राणायाम और ध्यान हमारे भीतर की रचनात्मकता को उजागर करने में मदद करते हैं।
 8. **पूर्ण हुई इच्छाएँ :** ध्यान से हमारी आनंद लेने की क्षमता बढ़ती है और इच्छाओं को पूरा करने की क्षमता भी बढ़ती है। जब हम अपने लिए कुछ नहीं चाहते तो हम दूसरों की इच्छाएँ पूरी करने में सक्षम होते हैं।
 9. **बेहतर उपस्थिति :** हम अपने शरीर की अपेक्षा अपने कम्पन के माध्यम से अधिक संदेश देते हैं। लेकिन न तो घर पर और न ही स्कूल में हमें कोई यह सिखाता है कि हम अपने स्पंदन को कैसे सुधारें। कैसे बहुत सकारात्मक महसूस किया जाए; यहीं पर ध्यान की भूमिका आती है। ध्यान हमारे शरीर की प्रत्येक कोशिका से निकलने वाले कंपन को अधिक सकारात्मक बनाता है।
 10. **खुशहाल रिश्ते :** ध्यान हमारी दृष्टिकोण को बदलने में मदद करता है। यह चीजों को देखने के नजरिए को बदलने में मदद करता है। हम लोगों के साथ कैसे बातचीत करते हैं हम विभिन्न परिस्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया करते हैं या कार्य करते हैं। इससे हमारे मन में स्पष्टता आती है और आसपास के लोगों के साथ हमारे रिश्ते में भी सुधार आता है।
- निष्कर्ष के तौर पर :** हम जानते हैं, यदि हम ध्यान से अपने जीवन में होने वाले लाभों पर गौर करें, तो हमें लगता है कि यह और भी अधिक प्रासंगिक है तथा आज के समय में इसकी और भी अधिक आवश्यकता है। प्राचीन काल में ध्यान का प्रयोग आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए, स्वयं को खोजने के लिए किया जाता था। ध्यान व्यक्ति की क्षमताओं को बेहतर बनाने, तनाव और परेशानी कम करने में मदद करता है। ध्यान हमें बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करता है। ध्यान आत्मा के लिए भोजन है। यह मन के लिए ऊर्जा का स्रोत है। यह शरीर के लिए जीवन रेखा है। यह शरीर को आकार में रखता है। हम कह सकते हैं कि अगर आप खुश और स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो आपको ध्यान करना चाहिए।





कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

वर्तमान की शक्ति, भविष्य की दिशा

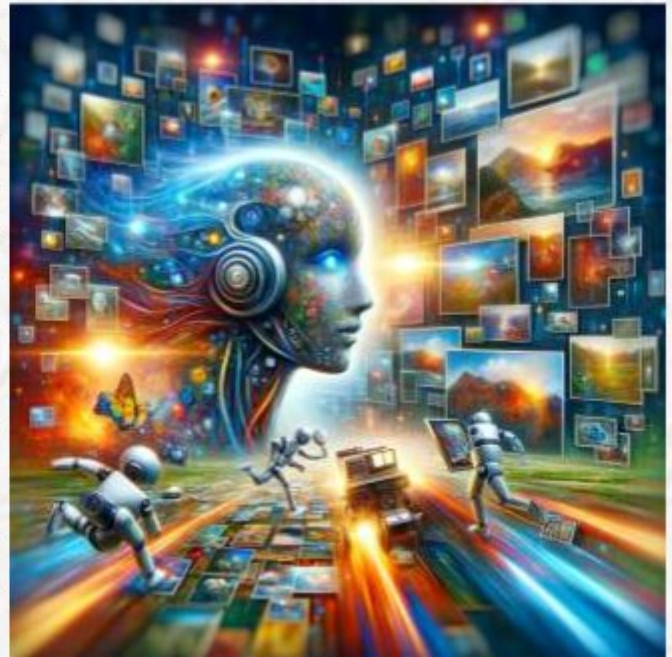


अभिषेक शर्मा
प्रशिक्षु अधिकारी (परियोजना)

आज का युग तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल क्रांति का युग है। इस परिवर्तन के केंद्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) तेजी से उभरती हुई ऐसी तकनीक है, जो मशीनों को मनुष्य की तरह सीखने, समझने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। कभी विज्ञान-कथा का विषय रही AI आज हमारे दैनिक जीवन और कार्यप्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। AI का प्रभाव लगभग हर क्षेत्र में दिखाई दे रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में यह रोगों की पहचान और उपचार में सहायता कर रही है, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत अध्ययन और स्मार्ट लर्निंग को बढ़ावा दे रही है। कृषि में मौसम एवं फसल संबंधी पूर्वानुमान, उद्योग में स्वचालन और गुणवत्ता नियंत्रण, बैंकिंग में धोखाधड़ी की पहचान तथा प्रशासन में बड़े आँकड़ों के विश्लेषण और बेहतर निर्णय लेने में AI का उपयोग बढ़ रहा है। इस प्रकार AI कार्यों को अधिक तेज, सटीक और कुशल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कार्यालयीन कार्यप्रणाली में भी AI नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर रही है। दस्तावेजों का विश्लेषण, डेटा का संकलन, रिपोर्ट तैयार करना, सूचना खोजना, अनुवाद तथा नियमित कार्यों का स्वचालन जैसे कार्यों में AI कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ा सकती है। इससे कर्मचारियों को समय लेने वाले दोहरावपूर्ण कार्यों से राहत मिल सकती है और वे अधिक महत्वपूर्ण, रचनात्मक एवं निर्णयात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। हालाँकि, AI के बढ़ते उपयोग के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन, व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा, गलत सूचना, AI द्वारा उत्पन्न नकली सामग्री तथा निर्णयों में संभावित पक्षपात जैसे विषय गंभीर हैं। इसलिए AI के विकास और उपयोग के साथ नैतिकता, पारदर्शिता, डेटा सुरक्षा और मानवीय निगरानी को समान महत्व देना आवश्यक है।

भारत के लिए AI एक बड़ी संभावना है। विशाल युवा आबादी, मजबूत डिजिटल आधारभूत संरचना और तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था के कारण भारत AI के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ सकता है। विशेष रूप से भारतीय भाषाओं, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य, कृषि और सार्वजनिक सेवाओं में AI का उपयोग देश के विकास को नई गति दे सकता है। भविष्य में AI और मानव क्षमता का समन्वय और अधिक महत्वपूर्ण होगा। AI मनुष्य की बुद्धि, रचनात्मकता और संवेदनशीलता का विकल्प नहीं, बल्कि उसका सहयोगी और क्षमता-वर्धक साधन बन सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि हम तकनीक से भयभीत होने के बजाय उसे समझें, उसके अनुरूप अपने कौशल को विकसित करें और उसका जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करें।





तुलसी राम मांडगे
एम.टी.एस.

मेहनत की राह

मेहनत की राह पर चलना सीखो,
हर कठिनाई को हल करना सीखो।
थोड़ा थक जाओ तो रुक मत जाना,
हर पल आगे बढ़ना सीखो।

सूरज किरणें देती हैं सीख,
अंधेरा कितना भी हो, न टूटे उनकी रीढ़।
इसी तरह मेहनत से डरो मत कभी,
रखो हौसला, रुको मत कभी।

बनाओ अपना लक्ष्य और बढ़ते चलो,
हार न मानो, खुद पर यकीन रखो।
क्योंकि मेहनत का फल मीठा होता है,
जो सच्चे दिल से मेहनत करे, वही सफल होता है।





एक कच्चा घड़ा हूँ मैं



शिवम शर्मा
पुत्र श्री विनोद शर्मा

एक कच्चा घड़ा हूँ मैं,
फिर भी बरसात में,
खड़ा हूँ मैं,
बूंदें बेरहम हैं,
उनको यह वहम है,
कि मैं टूट रहा हूँ
जो मैं चीख रहा हूँ
पर वो बेवकूफ हैं,
मैं तो सीख रहा हूँ
ऐसे पहले भी लड़ा हूँ मैं,
एक कच्चा घड़ा हूँ मैं,
एक तो राहों में बबूल बहुत हैं,
उसके ऊपर से अपने उसूल बहुत हैं,
उसके ऊपर से लोग टोकते रहते हैं,
के भाई उधर मत जाओ,
उधर फूल बहुत है।
ये जो हंस रही है दुनिया,
तेरी नाकामियों पे,
ताने कस रही है दुनिया,
मेरी नादानियों पे,
पर मैं काम कर रहा हूँ
मेरी सारी खामियों पे,
कल से मारेंगे ताली,
मेरी कहानियों पे,
कल जो बदलेगी हवा,

ये सब शरमाएँगे,
हमारे अपने हाँ, कहके
ये हमसे हाथ मिलाएँगे।
क्योंकि जिदी बड़ा हूँ मैं,
एक कच्चा घड़ा हूँ मैं,
फिर भी बरसात में खड़ा हूँ मैं।



एक उम्मीद है



मानव वासवानी
पुत्र श्रीमती आशा वासवानी

टूट चुके आइने के हिस्से में,
मेरा जुड़ा हुआ दिख जाना,
एक उम्मीद है।

भूख से तड़पते हुए,
नन्हें बालक को,
रोटी का टुकड़ा दिख जाना,
एक उम्मीद है।

अपनी माँ से बिछड़े हुए बछड़े को,
कहीं दूर रम्भाना, सुनाई दे जाना,
एक उम्मीद है।

आसमान की ओर आँखे गड़ाये बैठे,
किसान पर बारिश की,
एक बूँद का गिर जाना,
एक उम्मीद है।

नकारात्मकता के इस दौर में,
कुछ आशावादी
लोगों का मिल जाना,
एक उम्मीद है।





स्वाभिमानि बेटियाँ

पिंजरों से निकल आसमानों में,
उड़ने का साहस रखती हैं।
कठिन परिस्थिति लाँघ आगे बढ़ती,
हर रिश्ता प्यार से निभाती हैं।
धीरे-धीरे कदम बढ़ा सीमाओं पर,
दुश्मनों को ढेर करती,
अटूट हौसलों से हवाओं से बातें करती,
कभी काली तो कभी लक्ष्मी बन,
आत्मसम्मान बढ़ाती हैं।
जमाने के हिसाब से रूप लेती,
माँ बाबा का अभिमान बनती,
सबको स्वाभिमान सिखाती हैं।
अपने से पहले दूसरों का सोच,
उन्हें आगे बढ़ाती हैं,
देखें यही तो बेटियाँ कहलाती हैं।



महक नन्दवानी
पत्नि श्री अंकित आगवेकर



संघर्ष



श्रीमती अंजली खुशलानी
पति श्री धर्म प्रकाश खुशलानी

हमारे जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती रहती हैं। जीवन में संघर्ष से बचना सम्भव नहीं है। यही संघर्ष हमें और अधिक मजबूत बनाते हैं। दृढ़ निश्चय के द्वारा व्यक्ति इन समस्याओं और चुनौतियों का सामना करके अपने गंतव्य तक पहुँच सकता है। यही संघर्ष हमारी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमें सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। एक बार एक बूढ़ा गधा घास चरते-चरते कुँए में गिर गया। बाहर निकलने के लिये उसने बहुत कोशिश की लेकिन थककर हार गया। उसने लोगों की आहट सुनी और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। सभी गाँव वाले एकत्रित हो गए और उन्होंने भी गधे को बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन वे भी नाकाम रहे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कैसे बाहर निकाला जाए। गाँव वालों ने सोचा कि गधा तो बहुत बूढ़ा है, यदि मर भी गया तो ज्यादा नुकसान नहीं होगा क्योंकि इस गहरे कुँए में भी पहले भी कई लोग गिर चुके हैं व वे भी बाहर नहीं निकल पाए और वहीं मर गये तो क्यों न इस कुँए में मिट्टी डालकर इसको बंद कर दिया जाए। सभी ने मिलकर उस कुँए को बंद करने के लिए मिट्टी डालना शुरू कर दिया। जब गधे को समझ में आया कि ये लोग तो कुँए को ही बंद कर रहे हैं और वह मर जाएगा, तो बचने के लिये पहले तो वह बहुत जोर-जोर से चिल्लाया, लेकिन उसके चिल्लाने का किसी पर कोई असर नहीं हुआ और सब मिट्टी डालते ही गये। तब गधे ने इस विकट परिस्थिति से निपटने का खुद ही निर्णय लिया और वह शांत हो गया। जब लोग कुँए में मिट्टी डालते तो वह अपने शरीर को हिला हिलाकर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता और खुद उस मिट्टी के ऊपर अपना पैर रख देता। इस प्रकार धीरे-धीरे मिट्टी ऊपर आती जाती और गधा भी उस मिट्टी के साथ ही ऊपर आता रहा और अंत में कुँए से बाहर आ गया। यह देख गाँव वालों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इसी प्रकार हमारे जीवन में भी धूल मिट्टी रूपी अनेक विपत्तियाँ आती रहती हैं। हमें भी इन कठिन परिस्थितियों में अपनी समझदारी से राह बनाकर आगे बढ़ते जाना है।

जीवन में पाँच नियम हमेशा याद रखें।

1. कठिनाइयों से कभी न घबराएँ।
2. कठिन परिस्थितियों का बहादुरी से सामना करें।
3. स्वयं को कमजोर कभी न समझें।
4. विपत्ति में हमेशा शांत रहें।
5. सरल जीवन जियें।

अंत में इस कहानी का आशय यह है कि इंसान को कभी भी अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए और विपत्तियों में भी अवसर तलाश करते रहना चाहिए।





डिजिटलीकरण और डिजिटल इंडिया



देवाशीष दीक्षित
सुपुत्र डॉ. तृप्ति एम. दीक्षित



नए भारत की नई पहचान 21वीं सदी डिजिटल क्रांति की सदी है। आज जीवन का कोई भी क्षेत्र डिजिटलीकरण से अछूता नहीं रहा। इसी परिवर्तन को जन-आंदोलन बनाने के उद्देश्य से 1 जुलाई 2015 को माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा डिजिटल इंडिया मिशन का शुभारंभ किया गया। इसका मूल मंत्र है - भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में बदलना।

डिजिटल इंडिया तीन प्रमुख स्तंभों पर आधारित है - सभी नागरिकों के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचे का निर्माण, शासन और सेवाओं को डिजिटल माध्यम से मांग पर उपलब्ध कराना और नागरिकों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना। इस मिशन ने हमारे जीवन और कार्य-संस्कृति को पूरी तरह बदल दिया है। JAM Trinity - जनधन, आधार और मोबाइल के माध्यम से आज सरकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी बिचौलिए के सीधे लाभार्थी तक पहुँच रहा है।

UPI (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) ने भारत को विश्व में डिजिटल भुगतान में अग्रणी बना दिया है। आज एक छोटी सी गुमटी से लेकर बड़े प्रतिष्ठानों तक लेन-देन एक QR कोड से संभव है। शासन में ई-ऑफिस ने फाइलों को गति दी है, GeM पोर्टल ने खरीद में पारदर्शिता लाई है, तो डिजिलॉकर ने दस्तावेजों को कागज-मुक्त किया है। शिक्षा में DIKSHA, स्वास्थ्य में ABDM और कृषि में ई-नाम जैसी पहलों ने हर वर्ग को डिजिटल धारा से जोड़ा है।

निष्कर्ष: डिजिटलीकरण केवल तकनीक नहीं, बल्कि सोच में बदलाव है। यह पारदर्शी, त्वरित और समावेशी नए भारत की पहचान है।



हकीकत



आदित्य सोनी
सुपुत्र श्री आनंद सोनी

किनारे पर खड़े लोग,
कशियों को चलाना सिखाते रहे।

जो कभी लहरों से टकराए ही नहीं,
वो तूफानों के क्रिस्से सुनाते रहे।

जिनके हाथों ने कभी छाले देखे ही नहीं,
वो मेहनत का मतलब बताते रहे।
और जो खुद एक क़दम न चल सके,
वो दूसरों को मंज़िल दिखाते रहे।

ऐ "आज़ाद", मशवरे देना बहुत आसान होता है,
सफ़र की हकीक़त तो वही जानता है,
जो धूल, धूप और ज़ख्मों के साथ मुस्कुराता है।





मानव उपलब्धि को नई अंतरिक्ष उड़ान



कार्तिकेय दीक्षित
सुपुत्र डॉ. तृप्ति एम. दीक्षित

नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप एक अत्याधुनिक अंतरिक्ष दूरबीन है, जिसे ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने के लिए बनाया गया है। इसका नाम नैन्सी ग्रेस रोमन के नाम पर रखा गया है। वह नासा की पहली प्रमुख महिला खगोलशास्त्री थीं और उन्हें अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है। इसी कारण उन्हें अक्सर “हबल की माँ” भी कहा जाता है।

रोमन स्पेस टेलीस्कोप को पहले WFIRST के नाम से जाना जाता था। इस दूरबीन का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मांड के बारे में हमारी जानकारी को और बढ़ाना है। वैज्ञानिक इसका उपयोग यह समझने के लिए करेंगे कि ब्रह्मांड कैसे फैल रहा है और इस विस्तार की गति समय के साथ क्यों बदल रही है। इसके माध्यम से वैज्ञानिक डार्क एनर्जी और डार्क मैटर का अध्ययन करेंगे। डार्क एनर्जी और डार्क मैटर ब्रह्मांड के बहुत महत्वपूर्ण हिस्से हैं, लेकिन इनके बारे में अभी भी बहुत कुछ पूरी तरह से ज्ञात नहीं है। रोमन टेलीस्कोप का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य हमारे सौरमंडल के बाहर मौजूद ग्रहों यानी एक्सोप्लैनेट्स की खोज करना है। यह दूरबीन ऐसे ग्रहों को खोजने में मदद कर सकती है जो दूसरे तारों के चारों ओर घूमते हैं। इसके अलावा, यह अरबों तारों और आकाशगंगाओं का अध्ययन करेगी। वैज्ञानिक इससे ब्लैक होल और ब्रह्मांड में होने वाली कई अन्य घटनाओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप को अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य में स्थित नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया। इसे 30 अगस्त 2026 को स्पेसएक्स के फाल्कन हेवी रॉकेट से अंतरिक्ष में भेजा गया। इसका प्रक्षेपण कैनेडी स्पेस सेंटर के लॉन्च कॉम्प्लेक्स 39A से किया गया। यह वही स्थान है जिसका इस्तेमाल कई ऐतिहासिक अंतरिक्ष अभियानों के लिए किया जा चुका है।

अंतरिक्ष में पहुँचने के बाद रोमन टेलीस्कोप सूर्य और पृथ्वी के बीच स्थित एक विशेष क्षेत्र, जिसे लैग्रेंज बिंदु L2 कहा जाता है, के आसपास काम करेगा। यह स्थान पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर दूर है। इस स्थान से दूरबीन को अंतरिक्ष का बहुत बड़ा और साफ क्षेत्र देखने में मदद मिलेगी। रोमन स्पेस टेलीस्कोप की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक इसका बहुत बड़ा दृश्य क्षेत्र है। इसका अर्थ है कि यह एक समय में अंतरिक्ष के बहुत बड़े हिस्से का निरीक्षण कर सकता है। इससे वैज्ञानिक कम समय में बहुत अधिक आकाशीय पिंडों का अध्ययन कर पाएंगे।

यह दूरबीन 5 वर्षों तक अंतरिक्ष में काम करने के लिए बनाई गई है। इससे मिलने वाली जानकारी वैज्ञानिकों को ब्रह्मांड की



उत्पत्ति, विकास और भविष्य को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी। साथ ही, एक्सोप्लैनेट्स की खोज से यह जानने में भी सहायता मिल सकती है कि हमारी पृथ्वी जैसे ग्रह ब्रह्मांड में कितने सामान्य हैं। नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक बहुत महत्वपूर्ण मिशन है। यह हमें ब्रह्मांड को पहले से कहीं अधिक बड़े और स्पष्ट रूप में देखने का अवसर देगा। आने वाले समय में इससे मिलने वाली नई जानकारी ब्रह्मांड के कई अनसुलझे सवालों के जवाब खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।



छोटी चीजें, बड़ी खुशियाँ!



कुमारी सौम्या वर्मा
पुत्री श्रीमती विनय वर्मा

छोटी चीजें, बड़ा असर हमारी जिंदगी में बहुत सी ऐसी चीजें होती हैं जिन पर हम ज्यादा ध्यान नहीं देते। सुबह किसी का मुस्कराकर मिलना, किसी दोस्त का बिना कहे मदद कर देना, घर पर किसी का पूछ लेना कि दिन कैसा रहा या रास्ते में किसी अनजान इंसान का थोड़ी देर के लिए रास्ता दे देना। ये बातें देखने में बहुत छोटी लगती हैं, लेकिन कई बार यही छोटी बातें हमारा पूरा दिन अच्छा बना देती हैं। जरूरी नहीं कि खुश रहने के लिए हमेशा कोई बड़ी वजह हो। पसंद का खाना, अचानक किसी पुराने दोस्त का मैसेज आ जाना, बारिश में थोड़ी देर बाहर खड़े रहना या बिना किसी खास वजह के परिवार के साथ बैठकर बातें करना भी काफी हो सकता है। हम अक्सर बड़ी खुशियों और बड़ी उपलब्धियों का इंतजार करते रहते हैं। हमें लगता है कि जब कोई बड़ा लक्ष्य पूरा होगा, तभी सच में खुशी मिलेगी। लेकिन जिंदगी हमेशा ऐसे नहीं चलती। अगर हम हर छोटी अच्छी चीज को नजर अंदाज करते रहें, तो शायद बड़ी खुशियों के बीच भी कुछ कमी महसूस होती रहेगी। मुझे लगता है कि छोटी-छोटी चीजों को खुशी की वजह मानना भी एक तरह की आदत है। हर दिन कुछ अच्छा जरूर होता है, बस उसे देखने के लिए थोड़ा रुकना पड़ता है। आखिर में, जिंदगी सिर्फ बड़ी घटनाओं से नहीं बनती। बहुत सी छोटी बातें, छोटी खुशियाँ और छोटी यादें मिलकर ही जिंदगी को खास बनाती हैं।





रिद्धी मांडगे
पुत्री श्री तुलसी राम मांडगे



सिद्धी मांडगे
पुत्री श्री तुलसी राम मांडगे

उड़ान

कुछ सोच लेना,
कुछ कर लेना,
तभी तो नाम कमाएगा।
होते-होते सपनों को बुन,
उस पर मेहनत कर,
तभी तो कुछ कर पाएगा।
आसान कहाँ है संघर्ष कर,
पत्थर नहीं बाग बन,
तभी तो ऊँचा उड़ पाएगा।
नाजुक फूल नहीं,
सक्त चट्टान बन,
तभी तो खड़ा रह पाएगा।
मानों रास्तों पर आएँगी
कई मुश्किलें, पर डटे रहना,
तभी तो सपने साकार कर पाएगा।
कई लोग आयेंगे टोकने,
पर तू अपनी सुन अपनी कर,
तभी तो सबसे अलग बन पाएगा।



स्वच्छता गीत

हम सबने ये ठाना है,
देश को स्वच्छ बनाना है।
गाँव-गाँव और शहर-शहर,
सबको ये बतलाना है।

कचरा नहीं फैलाएँगे,
गंदगी दूर भगाएँगे,
स्वास्थ्य और समृद्धि का,
मंत्र जो हमने जाना है।

विद्यालय या घर हो हमारा,
साफ-सफाई लक्ष्य हमारा,
सही जगह हर चीज को रखकर,
आस-पास को सजाना है।

सड़कों को चमकाएँगे,
बागों को महकाएँगे,
गांधी जी के सपनों का,
भारत देश बनाना है।



CSR के अंतर्गत हडको क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा मध्यप्रदेश टाइगर फाउंडेशन सोसायटी को रेस्क्यू वाहन एवं 20 मोटरसाइकिल प्रदान

कार्यक्रम की झलकियां

हडको क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (IIFM), भोपाल को हडको के कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (C S R) कार्यक्रम के अंतर्गत मध्यप्रदेश टाइगर फाउंडेशन सोसायटी (MPTFS) को 20 मोटरसाइकिल एवं 1 रेस्क्यू ट्रक प्रदान किए गए।

दिनांक 22 मई, 2026 को भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (IIFM), भोपाल द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में माननीय श्री भूपेंद्र यादव जी, केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, भारत सरकार तथा माननीय श्री मोहन यादव जी, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

इस कार्यक्रम के दौरान ही हडको क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल की क्षेत्रीय प्रमुख डॉ. तृप्ति मिश्रा दीक्षित द्वारा MPTFS के अधिकारियों को वाहनों की प्रतीकात्मक चाबी सौंपी गई। इसके पश्चात माननीय केंद्रीय मंत्री एवं माननीय मुख्यमंत्री द्वारा संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर सभी वाहनों को जनसेवा हेतु रवाना किया गया।

कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में हडको के क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा बताया गया कि हडको, भारत सरकार के आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के अधीन एक नवरत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम है, जो वर्ष 1970 से किफायती आवास, स्मार्ट सिटी तथा शहरी अवसंरचना विकास के साथ-साथ CSR के माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय योगदान दे रहा है।

इसी कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वन्यजीव संरक्षण के लिए हडको द्वारा दिया जा रहा सहयोग पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। माननीय

मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी ने भी हडको की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश टाइगर स्टेट है और वन्यजीव संरक्षण में हडको की भागीदारी सराहनीय है। उन्होंने आगे कहा कि हडको द्वारा प्रदान किए गए वाहन MPTFS के माध्यम से वन विभाग के फ्रंटलाइन स्टाफ को उपलब्ध कराए जाएंगे। इनसे दुर्गम वन क्षेत्रों में पेट्रोलिंग सुदृढ़ होगी तथा संकटग्रस्त वन्यजीवों के त्वरित रेस्क्यू में मदद मिलेगी।

कार्यक्रम में CSR अंतर्गत हडको द्वारा प्रदान किए गए वाहनों की खबर को भोपाल के दैनिक भास्कर, पत्रिका, नई दुनिया टाइम्स ऑफ इंडिया सहित भोपाल से प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्रों तथा क्षेत्रीय न्यूज चैनलों पर व्यापक कवरेज प्राप्त हुआ।

हडको की यह CSR पहल वन्यजीव संरक्षण की दिशा में निश्चित ही एक सराहनीय कदम है।





न्यूज़ क्लिपिंग्स

हडको ने साँपी 20 बाइक एवं रेस्क्यू ट्रक



भूपेंद्र यादव एवं मुख्यमंत्री छ. मोहन यादव की मौजूदगी में फौज आद समारोह हुआ।
 भोपाल। हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (हडको) ने अपने कारपोरेट सामाजिक दायित्व के तहत मध्य प्रदेश टाइगर फाउंडेशन सोसायटी को 20 बाइक एवं एक रेस्क्यू ट्रक प्रदान किया। भारतीय वन प्रबंधन संस्थान में आयोजित फौज आद समारोह में केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव एवं सीएम छ. मोहन

यादव उपस्थिति में वाहनों को जनसेवा के लिए समर्पित किया गया। हडको, भारत सरकार के आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के अधीन एक सार्वजनिक उपक्रम है, जो वर्ष 1970 से देश में किये जा रही आवास, स्मार्ट सिटी तथा शहरी अधीनस्थ विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।



CORPORATE BUZZ

HUDCO Hands Over 20 Motorcycles and one rescue truck to MP Tiger Foundation

Housing and Urban Development Corporation Limited (HUDCO Ltd.), under its Corporate Social Responsibility (CSR) initiative, has handed over 20 motorcycles and one rescue truck to the Madhya Pradesh Tiger Foundation Society to strengthen



wildlife protection and rescue operations in the state. HUDCO, a Navratna Central Public Sector Enterprise under the Ministry of Housing and Urban Affairs, has played a significant role since 1970 in the development of affordable housing, smart cities and urban infrastructure across the country. The vehicles were flagged off at a ceremonial function held at the Indian Institute of Forest Management, Bhopal, in the presence of Union Minister for Environment, Forest and Climate Change Bhupendra Yadav and Chief Minister of Madhya Pradesh Mohan Yadav. On the occasion, Dr. Tripti Mishra Dixit, Regional Head, HUDCO, ceremoniously handed over the symbolic keys to officials of the foundation. The Union Minister and the Chief Minister subsequently flagged off the vehicles for deployment in wildlife protection and public service. Speaking at the event, Bhupendra Yadav described HUDCO's contribution to wildlife conservation as a commendable step towards environmental protection and sustainable development. Mohan Yadav also appreciated the initiative, noting that the organisation's involvement in conservation efforts is both timely and significant. HUDCO officials expressed confidence that the vehicles will enhance patrolling and rapid response capabilities of forest personnel, enabling more effective rescue and protection of wildlife.

Senior officials from HUDCO, IIFM and the Forest Department, including Sushobhan Sen, Dr. Sameeta Rajan and L. Krishnamoorthy, were present at the event.

राजधानी-भोपाल



राजधानी-भोपाल



दैनिक भास्कर, पत्रिका, राज एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया व अन्य भोपाल से प्रकाशित समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित किए गए



टी.बी. उन्मूलन जागरुकता एवं निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर कार्यक्रम की झलकियां





मध्य संदेश

CSR पहल के तहत वाटर कूलर फर्नीचर फिक्सचर वितरण कार्यक्रम की झलकियां



फर्नीचर की देखभाल करने की शपथ लेते हुए बच्चे





कार्यक्रम की झलकियाँ





मध्य संदेश

योग दिवस

कार्यक्रम की झलकियां



स्थापना दिवस

कार्यक्रम की झलकियां





मध्य संदेश

खेल दिवस

कार्यक्रम की झलकियां



विविध

कार्यक्रमों की झलकियाँ





सौजन्य भेंट





MP Tribal Museum